राजस्थान प्रवासी प्रबुद्धजन सम्मेलन,गुवाहाटी में माननीय अध्यक्ष का भाषण

भारत माता की जय ! जय जय राजस्थान !

आचार्य श्री प्रमुख सागर जी महाराज के श्री चरणों में कोटी-कोटी वंदन,प्रणाम ।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा आयोजित राजस्थान प्रवासी प्रबुद्धजन सम्मेलन में आप सभी के बीच आकार अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ।

एक कहावत राजस्थान के बारे में बहुत प्रसिद्ध है -

"सोने री धरती जठे चांदी रो आसमान
रंग रंगीलो रस भरियो रे म्हारो प्यारो राजस्थान
कण कण सु गुँजे जय जय राजस्थान।"

राजस्थान अपनी परंपरा के अनुरूप, अपनी संस्कृति के अनुरूप, इस प्रकार स्वागत सम्मान करता है, कैसे स्वागत और सम्मान देता है इसकी साफ-साफ झलक मैं आज यहाँ गुवाहाटी में भी अनुभव कर रहा हूँ।

आप दुनिया के किसी कोने में चले जाइए, लेकिन राजस्थान की जमीन से यह जुड़ाव, मातृभूमि के प्रति यह प्रेम कभी खत्म नहीं होता। इस विशाल परिसर में आज यह दृश्य स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

राजस्थान निरंतर हम पर अपना स्नेह लुटाता रहा है। मैं सदैव इसके लिए आभारी हूँ। और आज इस अवसर पर राजस्थान की वीरों की धरती को भी नमन करता हूँ।

राजस्थान में भक्ति और शक्ति दोनों का संगम है, महाराणा प्रताप के साहस, महाराजा सुरजमल के शौर्य, भामाशाह के समर्पण, पन्नाधाय के त्याग, मीराबाई की भक्ति, हाड़ी बाई के

बलिदान, अमृतादेवी के आत्मोत्सर्ग की कथ-गाथाएँ राजस्थान एवं वहाँ के वासियों के जन जीवन का हिस्सा है।

गगनचुंबी किले, रंग बिरंगे पगड़ियां, मीठी बोली, सुरीले गीत और मर्यादित रीत यही तो हमारे राजस्थान की पहचान है।

प्रकृति की चुनौतिपूर्ण परिस्थितियों से लौहा लेते हुए अन्न उत्पादन हो या फिर राष्ट्र रक्षा की चुनौती, राजस्थान सदियों से इस देश को प्रेरणा देता रहा है।

जब वैदिक कालीन भारतीय समाज, कुरीतियों और रूढ़िवादिता का शिकार हो गया था, तब भगवान महावीर ने समाज को न केवल उस जड़ता से बाहर निकलने का मार्ग प्रशस्त किया बल्कि सनातन धर्म को एक नया, सरल और सहज स्वरुप प्रदान किया। उन्होंने प्रेम, क्षमा, दया, करुणा और अहिंसा जैसे मूल्यों को पुनः स्थापित किया। हमारा देश ऋषियों, संतो और मुनियों की परंपरा वाला देश है। शताब्दियों तक मिलने वाली चुनौतियों के बावजूद भारत की मुनि परंपरा अटूट रही है। हमारा जैन समाज इसका जीता जागता प्रमाण है।

जैन धर्म के अनुसार जो बाहर की दुनिया को जीते वह वीर औऱ जो इन्द्रियों को जीत ले वह महावीर है ।

नवकार या णमोकार मंत्र में भी इस स्तर तक पहुँचने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान के अलग-अलग स्तरों के अनुसार ही नमस्कार का व्यवस्थित स्वरूप है।

भारत की आजादी एवं राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा में जैन समाज का महत्वपूर्ण योगदान है। लेकिन इतिहास की प्रचलित पुस्तकों में इसे ज्यादा स्थान नहीं मिला है। लेकिन यह सर्वविदित एवं ऐतिहासिक तथ्य है कि स्वतंत्र भारत के निर्माण में जैन समाज ने योगदान दिया है, एवं देश के स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

1857 में ग्वालियर के खजांची का कार्य कर रहे जैन समाज के अमरचंद बांठिया ने झांसी की रानी की सेना को 4 माह तक अपने खुद के कोष से वेतन भी दिया था।

भगवान महावीर स्वामी ने अहिंसा का संदेश दिया था। इसी तरह देश रक्षा के लिए महाराणा प्रताप के लिए अपना खजाना खोल देने वाले भामाशाह भी भगवान महावीर के अनुयाई

थे। भामाशाह का बेटा सुंडा भी उदयपुर में मुगलों के खिलाफ महाराणा प्रताप के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ा था। जैन समाज ने अध्यात्म के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आज हमारे लिए बड़े सौभाग्य का विषय हैं की हमारे मध्य चातुर्मास के लिए गुवाहाटी में पधारे आचार्य श्री प्रमुख सागर जी महाराज विराजे हैं। आप आचार्य पुष्पदन्त सागर जी के शिष्य हैं एवं क्रांतिकारी संत तरुणसागर जी के लघु भ्राता भी हैं।

गुरु उस दीपक के समान हैं, जो हमारे जीवन का अंधकार दूर करते हैं और ज्ञान रुपी प्रकाश हमारे जीवन में फैला कर हमारा जीवन उच्च बनाते हैं। जिनकी मेहर नजर हम पर रही तो हमारे जीवन का उद्धार हो जाता है।

अगर घर के दरवाजे पर ताला लगाया हो तो ताले की चाबी सीधी घुमाईं तो दरवाजा खुल जाएगा और उल्टी घुमाईं तो दरवाजा बंद हो जाएगा, यह चाबी घुमाने की कला हमें आनी चाहिए। बस यही चाबी घुमाने की कला हमें गुरू सिखाते हैं।

अध्यात्म के क्षेत्र में हमें प्रगति करनी है तो गुरु के मार्गदर्शन की जरूरत होती है। बिना गुरु के आत्मोन्नति संभव नहीं। धार्मिक व्यक्ति, अध्यात्म में रुचि रखने वाला हर व्यक्ति गुरु की खोज में रहता है। सच्चे गुरु मिल जाए तो आधि, व्याधि, उपाधि से मुक्ति हो जाए। गुरु ज्ञानी गुलाब की तरह है।

गुलाब की हर पंखुड़ी-पंखुड़ी में सुगंध होता है। वैसे ही गुरु के आदेश में हमारा कल्याण होता है।

संत वह है जो वसंत के समान लोक-हित में रत रहते हैं। धरती पर छोटे-बड़े जो वृक्ष सूखे पड़े हैं, पतझड़ में सभी पत्ते गिर जाने से जो ठूंठ से बन गए हैं। और लोग कहने लगते हैं कि अब ये पल्लवित पुष्पित नहीं होंगे। अतः उखाड़ फेको इन्हें।

परंतु जब वसंत का आगमन होता है, तब देखते ही देखते उन पर अंकुर प्रस्फुटित होने लगते हैं, नए पल्लव निकलने लगते हैं और फिर पुष्प एवं फलों से परिपूर्ण हो जाते हैं। और वह बहुत सुंदर सुहावने लगते हैं।

अनेक पशुओं, पक्षियों एवं मनुष्य के आश्रय स्थल बन जाते हैं। पक्षी उनके सिर पर आकर बैठने लगते हैं। वे डाल डाल पर आ कर बैठते हैं, चहचहाते हैं और पत्र पुष्पों को नोचते हैं। फलों को कुतर कुतर कर खाते हैं। फिर भी वह सब को अपने सिर पर रखता है।

वह कभी यह नहीं कहता, कौन पक्षी मेरे पर बैठेगा और कोई नहीं बैठेगा? ऐसा नहीं कि हंस तो बैठेगा पर बगुला नहीं, तथा कोयल तो बैठ सकती है पर कौवा नहीं? वह इतना उदार है कि जो आए वह बैठे।

इसी तरह सघन छाया में भी पशु आकर बैठे तो उसे शीतलता देता है और मनुष्य आकर विश्राम करें तो उसे भी शांति प्रदान करता है। सब को समान भाव से विश्राम एवं शीतलता प्रदान करता है।

इसके अतिरिक्त उसके पत्र, पुष्प, फल एवं जड़ भी औषध के काम में आते रहते हैं। यह सब काम किया किसने? वृक्ष का यह ऐश्वर्य, यह वैभव आया कहां से? वसंत ने दिया है यह महत्वपूर्ण ऐश्वर्य!

आपको इस ऊर्जा के साथ देखकर लगता हैं,आज प्रवासी राजस्थानी समाज सेवा के बड़े से बड़े मुकाम पर खड़ा है। हर सामाजिक भागीदारी आज राजस्थानी समाज के खाते में है। उद्योग क्षेत्र में भी लगभग सभी क्षेत्र में राजस्थानी समाज अग्रसर है।

मारवाड़ी व्यक्ति में बिजनेस के अलावा, अन्य स्किल भी हैं। वह अपने व्यवहार से किसी का मन दुखी नहीं करता है और सामाजिक समरसता से काम करता है और समाज को आगे ले जाने का सपना देखता है।

राजस्थानी समाज के लोगों ने अपने सांस्कृतिक, नैतिक, ऐतिहासिक, पारंपरिक मूल्यों से समृद्धि की राह पकड़ी है। समाज में शिक्षा, चिकित्सा व धार्मिक कार्यों में अपनी ओर से परमार्थ की भावना से काम किया है।

असम ने प्रवासी राजस्थानियों को बहुत कुछ दिया है और राजस्थानी लोग यहां आकर जिस तरह से यहां की सोशियो-इकॉनमिक कल्चर में रच-बस गए हैं, वह भी काबिल-ए-तारीफ है।

मोस्ट प्रोफेशनल यहां के कल्चर में जिस तरह आपने अपने सपने बुने और जगह बनाई, वैसे ही हजारों राजस्थान के यंग बच्चों, युवाओं ने भी यहां नाम कमाया है।

जिस पावन अवसर पर हम यहाँ एकत्रित हुए हैं,संतों का पावन सान्निध्य हमें प्राप्त हुआ है, वह हैं यह पवन चातुर्मास। मित्रों न केवल जैन धर्म अपितु हिन्दू धर्म में भी इसे सामूहिक वर्षायोग तथा चातुर्मास के रूप में जाना जाता है। हमारे धर्म में संन्यासियों, जैसे साधुओं का मानना था कि बारिश के मौसम के दौरान, अनगिनत कीड़े, कीड़े और छोटे जीव को नग्न आंखों में नहीं देखा जा सकता है तथा वर्षा के मौसम के दौरान जीवो की उत्पति भी सर्वाधिक होती है।

चलन-हिलन की ज्यादा क्रियाएं इन मासूम जीवों को ज्यादा परेशान करेगी। अन्य प्राणियों को साधुओं के निमित से कम हिंसा हो तथा उन जीवो को ज्यादा अभयदान मिले, उसके दृष्टिगोचर कम से कम तो वे चार महीने के लिए एक गांव या एक ठिकाने में रहने के लिए अर्थात विशेष परिस्थितिओं के अलावा एक ही जगह पर रह कर स्वकल्याण के उद्देश्य से ज्यादा से ज्यादा स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार को महत्व देते है।

जैन धर्म में चातुर्मास का अत्याधिक महत्व है। चातुर्मास काल सदैव अध्यात्मिक वातावरण और अच्छे विचार परिवर्तन का अवसर प्रदान करता है। जिस प्रकार बादल की सार्थकता बरसने में है, पुष्प की सुगंध में तथा सूर्य की सार्थकता रौशनी में है उसी प्रकार चातुर्मास की सार्थकता परिवर्तन में है।

चातुर्मास के दौरान साधु-साध्वीजी के साथ श्रावक, श्राविकाएँ, तप व आराधना करेंगे। गुरुजन धर्मावलंबियों को नियमित सत्य, अहिंसा और संयम का मार्ग बताएँगे। उनके प्रवचन का लाभ जैन समाज सहित अन्य लोग भी ले सकेंगे।

चातुर्मास आते और चले जाते हैं, परंतु हमारे लिए एक महत्वपूर्ण संदेश भी देकर जाते हैं। संदेश यह है कि हमने सारे चातुर्मास में कितना स्वाध्याय क्रिया, तप-त्याग क्रिया, समाज की सेवा की और जीवन में कितना परिवर्तन आया। यदि हम इन चातुर्मासों में से कुछ सीख ले सकें और अपने परिप्रेक्ष्य को स्वच्छ, सुंदर और स्वस्थ बनाकर अपने और दूसरों के जीवन में सुख शांति भर सकेंगें तो मेरा मानना है कि हमारा चातुर्मास सफल होगा।

स्वतंत्रता की भावना संस्कृति से ही प्रसारित होती है 'पराधीन सपनेहूँ सुख नाहीं'- इस भावना के मूल में देश प्रेम की भावना कार्य करती है जिसका आधार मज़बूत सांस्कृतिक धरोहर होती है। वैश्य भी देश प्रेम की इस पवित्र भावना से अछूते नहीं थे। मारवाड़ी या राजस्थानी समाज के बारे में देश में प्रचलित धारणा है कि ये सिर्फ व्यापारी हैं, यह एक भ्रान्ति के अलावा कुछ नहीं।

संस्कृति, साहित्य और राष्ट्रीयता के उत्थान में मारवाड़ी समाज का तन-मन-धन का भरपूर सहयोग रहा है।

राष्ट्र की अर्थव्यवस्था और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में राजस्थानी समाज का अभुतपूर्व योगदान है। राजस्थानी समाज के लोग देश-विदेश में जहाँ भी रहते हैं।

वे अपनी संस्कृति के आचार-व्यवहार का ध्यान रखते हैं। उद्यमशीलता और दानशीलता से इस समुदाय ने विशिष्ट पहचान बनाई है।

भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित यह शहर गुवाहाटी, प्राचीन सुंदरता से संपन्न है। विभिन्न प्रकार की छोटी-छोटी पहाड़ियों और बारहमासी शक्तिशाली ब्रह्मपुत्र नदी का परिवेश शहर को विशेष शोभा प्रदान करता है। गुवाहाटी भारत का एक महत्वपूर्ण शहर है क्योंकि यह भारत का एक व्यापार केंद्र भी है। इस शहर का प्राचीन काल से ही अपना गौरव रहा है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार शक्तिशाली नदी ब्रह्मपुत्र के पिता भगवान ब्रह्मा हैं। तो यह इंगित करता है कि यह शहर पौराणिक काल से अपना स्थान रखता है। प्रसिद्ध कामाख्या मंदिर और ब्रह्मपुत्र नदी पर छोटा सा द्वीप जहां उमानंदा मंदिर स्थित है, अपनी प्राचीन सुंदरता के कारण दुनिया भर के सभी लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं और इसी कारण से, भारतीयों के अलावा कई विदेशी भी इन स्थानों पर आते हैं।

राजस्थान और असम के लोगों के बीच संबंध प्राचीन काल से बहुत सौहार्दपूर्ण, सम्मानजनक रहे हैं।

भूटान की सीमा से सटे यहां के उदलगुड़ी जिले का छोटा सा गांव है बामुंजुली। लगभग डेढ़ हजार की आबादी वाले इस गांव के कुछ ऐसे युवा भी राजनीति में सक्रिय हैं, जिनके दादा-

परदादाओं का राजस्थान व हरियाणा की माटी से गहरा संबंध रहा है। लेकिन, तीसरी और चौथी पीढ़ी, असमी और बाहरी की खाई को पाट चुकी है। किसी पत्रकार मित्र ने जब उनसे सवाल पूछा तो उनके दिल की बात बाहर आ गई। वे बोले की -हमारे दादाजी राजस्थान से थे, मगर हम तो असम की माटी के लाल हैं।

अभी तो हम सबके लिए भी बड़े गर्व की बात हैं की हमारे राजस्थान के उदयपुर निवासी श्री गुलाब चंद कटारिया जी असम के 31वें राज्यपाल हैं।

राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए एक भारत, श्रेष्ठ भारत पहल के तहत प्राकृतिक सौंदर्य की भूमि असम को वीरता की भूमि राजस्थान के साथ जोड़ा गया है। दोनों राज्य पर्यटन, खेल, भोजन और संस्कृति और विरासत के लिए जाने जाते हैं। राजस्थान के लोगों ने असम की संस्कृति और परंपरा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। असम अपनी विविध संस्कृति और जातीयता के लिए जाना जाता है।

मारवाड़ क्षेत्र के लोगों का एक वर्ग कई साल पहले असम आया था और पूरे राज्य में बस गया था। उन्होंने कला और संस्कृति, असमिया साहित्य के साथ-साथ व्यवसाय में भी योगदान दिया था।

देश के प्रमुख फिल्म निर्माताओं, लेखक, कवि में से एक ज्योति प्रसाद अग्रवाल के पूर्वज राजस्थान से असम आए थे। फिल्म समीक्षक नयन प्रसाद ने रूपकंवर ज्योति प्रसाद अग्रवाल और उनके परिवार के योगदान को याद किया।

दोनों राज्य पिछले कई वर्षों से एक मजबूत सांस्कृतिक बंधन का आनंद ले रहे हैं। अब भाषा, साहित्य और कला-संस्कृति के माध्यम से संबंधों को और आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी नई पीढ़ी पर है।

राजस्थान के उद्यमियों ने देश के हर क्षेत्र में नाम कमाया है। आजादी से लेकर अब तक राजस्थानी समाज के लोगों ने भारत की आर्थिक उन्नति में अहम योगदान दिया है। राजस्थान आज तेज गति से प्रगति कर रहा है। शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, पानी हर क्षेत्र में बेमिसाल तरक्की की है।

उद्योग के क्षेत्र में राजस्थान में बेहतरीन काम हो रहा है। अब राजस्थान की पहचान अकाल और सूखे से नहीं बल्कि तेजी से बढ़ते राज्य के रूप में होती है।

आज अकेले 100 प्रमुख राजस्थानी उद्योगों का सिर्फ टर्नओवर ही 7,00,000 करोड़ रुपए का है। यही नहीं देश की जीडीपी में भी राजस्थानी उद्योगपतियों व व्यापारियों का योगदान 18 से 20 प्रतिशत तक है। देश के प्रमुख उद्योगपतियों की सूची में राजस्थानी उद्योगपतियों की संख्या सबसे ज्यादा है।

फोर्ब्स की सूची में भी देश के 100 प्रमुख उद्योगपतियों और धनी व्यक्तियों में हर साल 10 से 15 उद्योगपति राजस्थानी रहे हैं। देशभर में फैले मारवाड़ी उद्यमियों पर रिसर्च करने और कई किताबें लिखने वाले प्रोफेसर डॉ. डीके टकनेत कहते है कि देश की जीडीपी में राजस्थानी उद्योगपतियों की बड़ी भूमिका तो है ही, व्यापारियों की भी है। मारवाड़ी कोई जाति नहीं है, बल्कि विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक समूह का सूचक है। राजस्थान में पानी की कमी, कठोर जलवायु और विषम परिस्थितियों के बीच जुझारू मारवाड़ियों ने मेहनत कर बिजनेस में पहचान बनाई।

यही कारण है कि देश के लगभग हर राज्य में मारवाड़ी बड़े स्तर पर बिजनेस कर रहे हैं। आज प्रवासी राजस्थानी समाज सेवा के बड़े से बड़े मुकाम पर खड़ा है। हर सामाजिक भागीदारी आज राजस्थानी समाज के खाते में है। उद्योग क्षेत्र में भी लगभग सभी क्षेत्र में राजस्थानी समाज अग्रसर है।

राजस्थानी समाज सेवा कार्यों में भी अव्वल है। राजस्थानी समाज के लोगों ने सेवा के लिए कई प्रकल्प शुरू किए हैं। इन प्रकल्पों की मदद से पीड़ित मानवता की सेवा की जा रही है। राजस्थानी समाज के कार्य वास्तव में सराहनीय हैं।

आज हमारा देश न्यू इंडिया के सकंल्प को लेकर आगे बढ़ रहा है। वर्तमान में जब देश ने अपनी स्वाधीनता के 75 वर्ष पुरे किए हैं। और इससे भी एक और महत्वपूर्ण बात यह भी है कि राजस्थान के गठन को भी 74 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं।

इसी प्रकार न्यू इंडिया का निर्माण राजस्थान के बगैर संभव नहीं है। ऐसे में राजस्थान के मेरे भाईयों-बहिनों के लिए राजस्थान के साथ राष्ट्र निर्माण का यह सुनहरा अवसर है।

यह वर्ष देश के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस महान पुण्य अमृतकाल में यह देश पुण्य संकल्पों से आगे बढ़ रहा है। आइए एक नई दिशा को तय करके आगे बड़े। मुझे यह पुरा विश्वास है कि आप सभी की सक्रिय भागीदारी से सरकार को भी अपने संकल्पों को सिद्ध करने में सफलता मिलेगी।

इसी कामना के साथ ढेर सारी शुभकामनाएं एवं संतवृंद के चरणों में साष्टांग प्रणाम !